

पाठ— 12 इंद्रप्रस्थ

विदुर द्वारा अर्जुन के स्वयंवर की सूचना धृतराष्ट्र को दी गई ।

सूचना प्राप्त होने पर धृतराष्ट्र द्वारा बहू द्रौपदी के स्वागत सत्कार की तैयारी कर ली गई ।

आचार्य द्रोण और भीष्म से सलाह—मशविरा कर पांडवों को आधा राज्य दे दिया गया ।

विदुर को पांचाल देश पांडु पुत्रों को कुंती एवम्
द्रौपदी सहित धृतराष्ट्र ने लाने के लिए भेज दिया ।

धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को खांडवप्रस्थ को राजधानी
बनाकर वहीं से राज्य करने का आदेश दिया ।

पांडवों ने निपुण शिल्पकारों से नगर का निर्माण
कराया और उस नगर का नाम इन्द्रप्रस्थ रखा ।

पांडु पुत्र अपनी राजधानी इंद्रप्रस्थ में द्रौपदी और माता कुंती के साथ तेईस बरस तक सुखपूर्वक जीवन बिताते हुए न्यायपूर्वक राज्य करते रहे ।